फरीदाबाद

मजदूर समाचार

राहें तलाशने-बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

नई सीरीज नम्बर 226 अप्रैल 2007

आतंकवादी हैं सड़कें

सरकार के अनुसार दिल्ली में ही सन् 2006 में 8838 सड़क हादसों में 1910 लोग मारे गये और 7970 लोग गम्भीर रूप से घायल हुये।

आप-हम क्या-क्या करते हैं... (14)

अपने स्वयं की चर्चायें कम की जाती हैं। खुद की जो बातें की जाती हैं वो भी अक्सर हाँकने-फाँकने वाली होती हैं, स्वयं को इक्कीस और अपने जैसों को उन्नीस दिखाने वाली होती हैं। या फिर, अपने बारे में हम उन बातों को करते हैं जो हमें जीवन में घटनायें लगती हैं — जब-तब हुई अथवा होने वाली बातें। अपने खुद के सामान्य दैनिक जीवन की चर्चायें बहुत-ही कम की जाती हैं। ऐसा क्यों है? ★ सहज-सामान्य को ओझल करना और असामान्य को उभारना ऊँच-नीच वाली समाज व्यवस्थाओं के आधार-स्तम्भों में लगता है। घटनायें और घटनाओं की रचना सिर-माथों पर बैठों की जीवनक्रिया है। विगत में भाण्ड-भाट-चारण-कलाकार लोग प्रभुओं के माफिक रंग-रोगन से सामान्य को असामान्य प्रस्तुत करते थे। छुटपुट घटनाओं को महाघटनाओं में बदल कर अमर कृतियों के स्वप्न देखे जाते थे। आज घटना-उद्योग के इर्दगिर्द विभिन्न कोटियों के विशेषज्ञों की कतारें लगी हैं। सिर-माथों वाले पिरामिडों के ताने-बाने का प्रभाव है और यह एक कारण है कि हम स्वयं के बारे में भी घटना-रूपी बातें करते हैं। ★ बातों के सतही, छिछली होने का कारण ऊँच-नीच वाली समाज व्यवस्था में व्यक्ति की स्थिति गौण होना लगता है। वर्तमान समाज में व्यक्ति इस कदर गौण हो गई है कि व्यक्ति का होना अथवा नहीं होना बराबर जैसा लगने लगा है। खुद को तीसमारखाँ प्रस्तुत करने, दूसरे को उन्नीस दिखाने की महामारी का यह एक कारण लगता है। ★ और, अपना सामान्य दैनिक जीवन हमें आमतौर पर इतना नीरस लगता है कि इसकी चर्चा स्वयं को ही अरुचिकर लगती है। सुनने वालों के लिये अक्सर "नया कुछ" नहीं होता इन बातों में। ★ हमें लगता है कि अपने-अपने सामान्य दैनिक जीवन को "अनदेखा करने की आदत" के पार जा कर हम देखना शुरू करेंगे तो बोझिल-उबाऊ-नीरस के दर्शन तो हमें होंगे ही, लेकिन यह ऊँच-नीच के स्तम्भों के रंग-रोगन को भी नोच देगा। तथा, अपने सामान्य दैनिक जीवन की चर्चा और अन्यों के सामान्य दैनिक जीवन की बातें सुनना सिर-माथों से बने स्तम्भों को डगमग कर देंगे। ★ कपड़े बदलने के क्षणों में भी हमारे मन-मस्तिष्क में अक्सर कितना-कुछ होता है! लेकिन यहाँ हम बहुत-ही खुरदरे ढँग से आरम्भ कर पा रहे हैं। मित्रों के सामान्य दैनिक जीवन की झलक जारी हैं।

★ **26 वर्षीय मजदूर** : सुबह 6 बजे की शिफ्ट के लिये 4-4½ बजे उठता हूँ। साइकिल नहीं है, 5 बजे तैयार हो कर 45-50 मिनट पैदल चल कर फैक्ट्री पहुँचता हूँ। देर होने पर दौड़ कर जाना — जाड़े में भी पसीना आ जाता है। सर्दियों में अन्धेरे में रेल लाइन और मथुरा रोड़ पार करना। सुबह 5 बजे सुनसान होता है। चलते-चलते दिमाग में आता है कि यह भी कोई जिन्दगी है.....

हरियाली तीज पर फिरोजाबाद चूड़ी लाने गये पिताजी टूण्डला में लाइन पार करते समय रेल से कट गये थे। मैं तब पेट में था और माँ का निकाह चाचा के साथ कर दिया गया। मनिहारों में चार घार (पाट) हैं, गोत्र हैं और आमतौर पर ब्याह-शादी घार के अन्दर ही होती है। मथुरा जिले के एक गाँव के रहने वाले मेरे पिता व चाचा की शादी अहमदाबाद में दो बहनों से हुई थी। हादसे के बाद मौसी की फिर अहमदाबाद में शादी कर दी गई.... दो साल में मौसी की आग लगने-लगाने से मृत्यु हो गई। इधर बचपन से ही घर में मैंने भारी कलह झेली है। कुछ तो ब्रज व गुजराती भाषाओं की दिक्कत थी और फिर दादी व बुआ की माँ से खटपट — मेरे दूसरे पिता जी माँ को बहुत ज्यादा पीटते, मुझे बहुत बुरा लगता पर मैं कुछ कर नहीं सकता था। नाना-नानी ने पंचायत की, माँ अहमदाबाद चली जाती और फिर आ जाती। माँ अब भी कहती है कि मैं तेरे कारण यहाँ रुकी अन्यथा.....

छह बजे फैक्ट्री में पहुँच कर साथी मजदूरों से हाथ मिलाता हूँ। सामान लाते हैं और खाली पेट काम शुरू कर देता हूँ। नाश्ता तो कभी घर पर भी नहीं.....

माँ ने माँटेसरी में दाखिल करवाया था। अहमदाबाद गई तो मुझे छिपा लिया और बकरियों के बच्चों की देखभाल में लगा दिया। दादी चूड़ी पहनाती थी, पिताजी बकरी चराते थे और चार महीने दूध बेचने के लिये बकरियों को आगरा के पास एक गाँव में ले जाते। लौट कर माँ ने मुझे पहली कक्षा में दाखिल करवाया। मैं दूसरी में, चौथी में, दसवीं में फेल हुआ.... स्कूल में अध्यापक पिटाई बहुत करते थे, लड़कियों की भी। बच्चे छुआछूत और ऊँच-नीच का व्यवहार करते थे इसलिये मुझे खेल पसन्द नहीं थी, नफरत थी खेलों से और अब भी इन में रुचि नहीं है। किताब खोले बैठा रहता.....

फैक्ट्री में खड़े-खड़े काम करना पड़ता है। पहला ब्रेक 8½ बजे। तब तक खाली पेट। मैं चाय नहीं पीता और एक रुपये में नाश्ता करता हूँ, कभी-कभी वह भी नहीं करता, पानी पीता हूँ और फिर सीधा भोजन.....

नकल तो पाँचवीं की बोर्ड परीक्षा में भी थी (अध्यापक करवाते थे) और दसवीं की परीक्षा में भी। दसवीं कर घर में क्लेश के कारण मैंने फरीदाबाद में फूफा व चाचा के जरिये नौकरी ढूँढी पर नहीं मिली। अहमदाबाद गया और वहाँ बुआ ने एक बेकरी, एस.वी. बेकर्स में लगवाया। वहाँ 25-30 लोग काम करते थे। बेकरी में ही सब रहते थे। काम सुबह 5 बजे शुरू होता और कम से कम रात 10 बजे तक होता था। आराम नाम की चीज तो उसमें थी ही नहीं। भोजन का प्रबन्ध बेकरीवाले ने किया था — खाना बनाने वाली आती थी। काम चलता रहता और भोजन हम बारी-बारी से करते। पैकिंग वालों को तो रात के 1-2 बज जाते। दिवाली पर 4-5 दिन तो सब को रात के 3 बज जाते, 24 घण्टे भी लगातार काम करना पड़ता — कुछ बेकरियों में तो नींद नहीं आने की दवाई देते थे। बेकरी वाला रोज रात 10 बजे बेकरी के बाहर से ताला लगा जाता, रात को फोन करके काम के बारे में पूछता, जाँच के लिये भी आ जाता। शनिवार शाम को खर्चा मिलता, रविवार को घूमने जाते। तीन महीने बाद वहाँ काम छोड़ कर 150 मजदूरों वाली एक वर्कशॉप में लगा जहाँ ड्युटी 12 घण्टे की थी। दो महीने बाद वह छोड़ कर फौज में भर्ती होने के लिये गाँव चला आया.....

सुबह 6 बजे की शिफ्ट में हमारे साथ लड़कियाँ भी हैं। ब्रेक में लड़कियाँ अलग बैठती हैं, लड़के उल्टी-सीधी अश्लील बातें करते हैं। पौने नौ बजे सब फिर मशीनों पर। भोजन के लिये 11 बजे आधे घण्टे का समय.... भोजन की व्यवस्था दूसरे प्लान्ट की कैन्टीन में है, 5 मिनट पहुँचने में लगते हैं, दौड़ कर जाता हूँ। दस रुपये में थाली, खाना धीरे-धीरे खाता हूँ.... **(बाकी पेज तीन पर)**

फौज में भर्ती के लिए अच्छी खुराक ली, दौड़, दण्ड-बैठक, बीम की। एक रिश्तेदार था इसलिये आगरे में 4 बार भर्ती के लिये गया। मेरठ, रुड़की, मथुरा, अल्मोड़ा, दिल्ली में भर्ती देखी..... हर जगह

दर्पण में चेहरा–दर–चेहरा

चेहरे डरावने हैं.... आईना ही नहीं देखें या फिर हालात बदलने के प्रयास करें?

ग्लोब कैपेसिटर मजदूर : "प्लॉट 22 बी इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं पर कम्पनी 2-2 घण्टे ओवर टाइम के बताती है और इन दो घण्टों का भुगतान भी सिंगल रेट से करती है। यहाँ 8=10 हैं। इस समय कम हैं पर फिर भी 80 कैजुअल वरकर हैं और इन्हें 10 घण्टे काम के बदले 60 रुपये। तीस दिन के महीने में 4 या 5 रविवार होने पर तनखा 1248 या 1200 रुपये हुई .... जाँच के लिये आये सरकारी अधिकारी को एक कैजुअल ने तनखा 1200 रुपये बताई थी तो बाद में ग्लोब कैपेसिटर के चेयरमैन-मैनेजिंग डायरेक्टर ने सत्याग्रही दुख जताते हुये कहा था कि जो देते हैं वह तो बताओ ! बड़े साहब का हिसाब 60x30=1800 वाला है – आठ घण्टे और साप्ताहिक छुट्टी इसमें नहीं हैं। वैसे कैजुअल वरकरों की ई.एस.आई. व पी.एफ. नहीं हैं, यानी, यह मजदूर कम्पनी तथा सरकार के दस्तावेजों के अनुसार फैक्ट्री में हैं ही नहीं हालाँकि ये रोज 12-12 घण्टे इस फैक्ट्री में काम करते हैं। नियमित थैलियों ने जाँच की पूर्व-सूचना को नियमित बना कर जाँच को औपचारिकता बनाया हुआ है। जिस दिन 8½ घण्टे बाद छुट्टी हुई उस दिन जाँच थी... जिस दिन कैजुअलों को फैक्ट्री से बाहर रखा उस दिन जाँच थी। शिकायतों पर लीपापोती और खानापूर्ति के लिये कुछ मजदूरों को तो दिखाओ ही के कारण रगड़-रगड़ कर 40 मजदूर स्थाई किये गये हैं। दस घण्टे के 60 रुपये के संग किसी स्थाई मजदूर की जमानत पर इधर कैजुअल वरकर मिल नहीं रहे जबकि कम्पनी को ज्यादा मजदूर चाहियें। ऐसे में कम्पनी ने जमानत वाली शर्त हटा दी है और 10 घण्टे के 80 रुपये देगी – मजदूर लाओ ! काम का भारी जोर है, स्थाई मजदूरों के 100 रुपये बढाने के बदले में कम्पनी उत्पादन 10 % बढाने की कह रही है पर कोई मजदूर राजी नहीं हो रहा। स्थाई मजदूरों के लिये भी 8=10 है और 2 घण्टे के पैसों को भत्तों में दिखाते हैं – दस्तावेजों में ओवर टाइम का जिक्र नहीं। ग्लोब कैपेसिटर की इन्डस्ट्रीयल एरिया में ही प्लॉट 30/8 स्थित फैक्ट्री में भी यही बातें हैं।"

साही प्रिन्टिंग प्रेस वरकर : "प्लॉट 152 डी. एल. एफ. इन्डस्ट्रीयल एस्टेट स्थित फैक्ट्री में 100 स्थाई, 200 कैजुअल तथा ठेकेदार के जरिये रखे 100 वरकर काम करते हैं। ई.एस. आई. व पी.एफ. 100 स्थाई मजदूरों की ही हैं। फैक्ट्री में सुबह 8½ से रात 8½ बजे की शिफ्ट है। ओवर टादम 3½ घण्टे का और भुगतान सिंगल रेट से। कैजुअलों तथा ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों की तनखा 2000 रुपये।"

सालब्रोस इन्टरप्राइजेज मजदूर : "प्लॉट 1ए सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 35-40 मजदूर काम करते हैं पर ई.एस.आई. कार्ड 4 को ही दिये हैं और पी.एफ. की पर्ची इन 10 साल से काम कर रहों को भी नहीं दी हैं। हैल्परों की तनखा 1600-1900 रुपये और ऑपरेटरों की 2100-2300 रुपये। एक शिफ्ट है और रोज 2 से 4 घण्टे ओवर टाइम जिसके पैसे सिंगल रेट से। फैक्ट्री में रबड़ का काम है, गर्म काम है, गैसों की भारी बदबू रहती है पर एग्जास्ट फैन नहीं है। एक्सीडेन्ट होने पर निजी चिकित्सालय में उपचार। एक मजदूर, वीरेन्द्र का 11.11.06 को रोला में हाथ आ गया, कुचला गया। मैनेजमेन्ट ने एक्सीडेन्ट रिपोर्ट नहीं भरी, 6 साल से काम कर रहे वीरेन्द्र की ई. एस.आई. नहीं थी, कम्पनी घायल मजदूर को भाटिया नर्सिंग होम ले गई। सालब्रोस में हीरो होण्डा, मारुति, मुंजाल, इम्पीरियल ऑटो आदि का काम होता है।"

एस.के.एन. वरकर : "12/3 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में सुबह 9 से साँय 5½ की शिफ्ट है पर रोज रात 12 बजे तक जबरन रोकते हैं। रौटी के पैसे नही देते और ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से करते हैं। फैक्ट्री में काम करते 500 मजदूरों में 60 स्थाई हैं, 20 वरकर एक ठेकेदार के जरिये रखे हैं, और बाकी 400 से ऊपर कैजुअल वरकर हैं। कैजुअलों में 60 को ही दस्तावेजों में दिखाते हैं। हैल्परों की तनखा 1800 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।"

अल्पिया पैरामाउन्ट रबड़ मजदूर : "प्लॉट 60 सैक्टर-25 स्थित फैक्ट्री में काम करते 600 वरकरों में से 70 की ही ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं। फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। कैजुअल वरकरों की साप्ताहिक छुट्टी है और 12 घण्टे रोज पर महीने के 3000 रुपये। ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों की साप्ताहिक छुट्टी नहीं और तीसों दिन 12 घण्टे ड्युटी के बदले 3000 रुपये।"

क्लच ऑटो वरकर : "12/4 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में कैजुअल वरकरों को हर 6 महीने बाद ब्रेक दे कर फिर रख लेते हैं। स्थाई काम है और 5-6 साल से फैक्ट्री में काम कर रहे 500 मजदूर इन ब्रेक-दर-ब्रेक के जरिये कैजुअल वरकर बना कर रखे हैं।"

निकोन मैटल मजदूर : "प्लॉट 219 डी सैक्टर-59 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। रविवार को 8 घण्टे काम। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से, वह भी बेसिक पर। फैक्ट्री में 30 मजदूर काम करते हैं पर रजिस्टर में नाम 7-8 के ही हैं। हैल्पर की तनखा 1800 रुपये और ऑपरेटरों की 2000-2200 रुपये। कई साल से फैक्ट्री में काम कर रहों को निकालने के लिये देरी से आने, चोरी के आरोप वाले बहाने बना रहे हैं। सरकारी अधिकारी आते हैं, पैसे ले कर चले जाते हैं – एक साहब ने पहले दिन तो चाय पीने से भी इनकार कर हड़काया और फिर दूसरे दिन पैसे ले कर चुपचाप चला गया।"

रिलायबल डिस्ल इंजिनियरिंग वरकर : "प्लॉट 12 सी गुरुकुल (प्लासर इण्डिया के पीछे) स्थित फैक्ट्री में सुबह 8½ से रात 8½ तक की एक शिफ्ट है। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। फैक्ट्री में 150 मजदूर काम करते हैं – ई.एस.आई. व पी.एफ. 6 महीने के काटत पर जमा 3 महीने के करते हैं। बोनस नहीं देते।"

शिवालिक ग्लोबल मजदूर : "12/6 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में तनखा तथा ओवर टाइम के पैसों में बहुत गड़बड़ करते हैं। फरवरी की तनखा 20 मार्च को दी तो ई.एस.आई. व पी. एफ. राशि काट कर 2000 रुपये से कम दी। फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं और ओवर टाइम को दस्तावेजों में नहीं दिखाते। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से तो देते ही हैं, जनवरी के ओवर टाइम का भुगतान 20 मार्च को किया तो इसमें 300 से 600 रुपये की गड़बड़ी थी। यह हाल होजरी विभाग का है जहाँ के 100 मजदूर कम्पनी ने स्वयं भर्ती किये हैं। प्रिन्टिंग विभाग और धागा प्लान्ट के 250 वरकरों को ठेकेदारों के जरिये रखा है जिनमें हैल्परों को 12 घण्टे के 90 रुपये के हिसाब से देते हैं और फरवरी के आज 21 मार्च तक नहीं दिये हैं। एक्सपोर्ट का कार्य बुढिया नाले के पास ले गये हैं और खाली हुई जगह पर श्याम टैक्स इन्टरनेशनल का एक्सपोर्ट का काम हो रहा है।"

एस पी एल इन्डस्ट्रीज मजदूर : "प्लॉट 21 व 22 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में मजदूरों की रेगुलर, कैजुअल, पीस रेट वाले, ठेकेदारों के जरिये रखे वाली कैटेगरी हैं। रेगुलर को 8.33% बोनस, 16 अर्जित तथा 14 कैजुअल छुट्टियाँ देते हैं परन्तु 5-5½ माह बाद दो दिन का ब्रेक करते हैं – कह देते हैं कि मत मानना। रेगुलर और कैजुअल की 12-12 घण्टे की शिफ्ट हैं और ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से देते हैं। पीस रेट वाले कारीगर हैं परन्तु इन्हें काम ठेकेदारों के जरिये दिया जाता है। जिन्हें ठेकेदारों के जरिये रखा कहते हैं उन्हें 15 दिन पर एक छुट्टी देते हैं और 12 घण्टे रोज पर महीने के 2440 रुपये देते हैं। पूरा उत्पादन निर्यात होता है, बायर आते रहते हैं और कम्पनी इस बात का प्रबन्ध करती है कि मजदूर सच्चाई उजागर नहीं करें।"

ऑटो इग्निशन वरकर : "ऑटो इलेक्ट्रिकल पार्ट्स बनाती कम्पनी की प्लॉट 6 सैक्टर-24 व 1 19/6 मथुरा रोड़ फरीदाबाद, रुद्रपुर और दक्षिण अफ्रीका में फैक्ट्रियाँ हैं। फरीदाबाद में सुबह 8 बजे आरम्भ होती शिफ्ट को रोज रात 8½ तक कर रखा है और साँय 4½ शुरू होती शिफ्ट को अक्सर अगले रोज सुबह 5 बजे तक करते हैं। रविवार को भी एक शिफ्ट में काम। स्थाई मजदूरों को हैल्पर के न्यूनतम वेतन के डबल के हिसाब से ओवर टाइम का भुगतान करते हैं। ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों को ओवर टाइम 10 रुपये प्रतिघण्टा की दर से देते हैं। कई ठेकेदार हैं, एक 12 घण्टे पर महीने के 2000 रुपये और दूसरा 2485 रुपये देता है। इन दो ठेकेदारों के लिये ओवर टाइम 12 घण्टे बाद शुरू होता है। एक ठेकेदार, शिव एसोसियेट्स के जरिये ऑटो इग्निशन तथा ऑटो गैलन में

(बाकी पेज तीन पर)

कानून हैं शोषण के लिये और छूट है कानून से परे शोषण की

कानून : ●37-40 दिन काम करने पर 30 दिन की तनखा, अगले महीने की 7-10 तारीख तक दे ही देना; ●8 घण्टे की ड्युटी, तीन महीने में 50 घण्टे से ज्यादा ओवर टाइम काम नहीं, ओवर टाइम का भुगतान वेतन की दुगुनी दर से; ● डी.ए. का आँकड़ा 30 बता कर हरियाणा सरकार ने न्यूनतम वेतन में 69 रुपये 30 पैसे की वृद्धि की है। ऐसे में 1.1.2007 से हरियाणा में सरकार द्वारा निर्धारित कम से कम वेतन इस प्रकार हैं : अकुशल श्रमिक (हैल्पर) के लिये 8 घण्टे प्रतिदिन ड्युटी और साप्ताहिक छुट्टी पर तनखा 2553 रुपये 58 पैसे (8 घण्टे के 98 रुपये 21 पैसे); अर्ध-कुशल की तनखा 2663 रुपये 58 पैसे; कुशल मजदूर की 2813 रुपये 58 पैसे; उच्च कुशल श्रमिक का महीने का कम से कम वेतन 3113 रुपये 58 पैसे। मुख्य मन्त्री की 3510 रुपये न्यूनतम वेतन की फरवरी में की घोषणा के बारे में श्रम विभाग अप्रैल के आरम्भ में भी कहता है कि सरकार से कोई सूचना नहीं आई है।

वी जी इलेक्ट्रिकल्स मजदूर : "प्लॉट 367 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में 45 मजदूर काम करते हैं – ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। हैल्परों की तनखा 1700 रुपये और ऑपरेटरों की 1800-3000 रुपये।"

जी डी एम वरकर : "सैक्टर-25 स्थित फैक्ट्री में 12 स्थाई मजदूर, 50 कैजुअल वरकर और 5 ठेकेदारों के जरिये रखे 100 वरकर काम करते हैं। कम्पनी द्वारा स्वयं भर्ती हैल्पर की तनखा 1700 रुपये और ठेकेदारों के जरिये रखे की 1500 रुपये। ई.एस.आई. व पी.एफ. सिर्फ 12 स्थाई मजदूरों की ही हैं।"

सुडट्रैक लिन्केज वरकर : "मथुरा रोड़ पर बुढिया नाले के पास स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 1600-1800 रुपये। फरवरी का वेतन आज 21 मार्च तक नहीं दिया है – तनखा देरी से, 28-29 तारीख को जा कर देते हैं।"

इको ऑटो मजदूर : "प्लॉट 20 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में जनवरी की तनखा 16 फरवरी को जा कर दी थी और फरवरी का वेतन आज 14 मार्च तक नहीं दिया है।"

मैक्स फोरजिंग वरकर : "प्लॉट 246 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में काम करते 100 मजदूरों में 8 स्थाई हैं। हैल्परों की तनखा 2000 रुपये और ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।"

नूकेम केमिकल मजदूर : "प्लॉट 54 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में फरवरी की तनखा आज 15 मार्च तक नहीं दी है।"

एस पी एल इन्डस्ट्रीज वरकर : "प्लॉट 84 सैक्टर-25 स्थित फैक्ट्री में 16 घण्टे की ड्युटी करनी पड़ रही है। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। हर महीने हेराफेरी द्वारा साहब लोग 2 से 10 तक दिहाड़ियाँ गड़प जाते हैं।"

रोलाटेनर्स वरकर : "14/5 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में फरवरी की तनखा आज 13 मार्च तक नहीं दी है।"

प्रणव विकास वरकर : "प्लॉट 44-45 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में ओवर टाइम काम करवाते हैं। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से करते हैं।"

(ऑटो इग्निशन जारी) रखे गये 150 वरकरों की भविष्य निधि राशि जमा नहीं करवाई गई। कम्पनी ने साल-भर पहले ठेका खत्म कर दिया पर उन मजदूरों को पी.एफ. के पैसे नहीं मिले हैं। कम्पनी की मथुरा रोड़ फैक्ट्री में वार्निश में डिप करके फील्ड कॉयल को ओवन में पकाते हैं तब पूरी फैक्ट्री में धुँआ फैल जाता है, दिन में दो बार। आर्मेचर के फाइनल में लैकरिंग में एन. सी. थिन्नर लगातार इस्तेमाल होता है – इससे आँखों में छाती में जलन होती है।"

महीने में एक बार छापते हैं, 5000 प्रतियाँ फ्री बाँटते हैं। मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें, अन्यथा भी चर्चाओं के लिए समय निकालें।

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी,
आटोपिन झुग्गी,एन.आई.टी
फरीदाबाद–121001

आप-हम क्या-क्या करते हैं... (पेज एक का शेष)

भारी भीड़, जम कर हँगामा होता, आर्मी वाले लाठियाँ मारते। भर्ती में मिलती निराशा के कारण वृन्दावन में आई टी आई में दाखिला लिया। आई टी आई करने के बाद खाली बैठना पड़ा तब इन्टर में दाखिला ले लिया। आगरा में एक आई टी आई अध्यापक को 1700 रुपये रिश्वत दी तब उषा मार्टिन कन्स्ट्रक्शन स्टील फैक्ट्री में मुझे अप्रेन्टिस रखा। वहाँ रोज एक्सीडेन्ट होते – गर्म सरिया किसी के पैर में घुस जाता, कोई मशीन में फँस जाता, तेल-पानी के कारण फिसल कर गिर जाते, जल जाते.... एक इंजिनियर कहता कि तुम कहीं भी नौकरी नहीं कर पाओगे क्योंकि तुम्हारी सोच नेगेटिव है। जब 7-8 साल का था तब से फिल्मों में रुचि है, आगरा में अप्रेन्टिस था तब यह शौक और बढा। साल-भर बाद वापस गाँव में और फिर खाली। घरवाले कहते कि वह 5 हजार काम रहा है, वह दस हजार और यह कहीं जाता ही नहीं..... थ्रेशर पर मूठा लगा कर मैंने 20 रुपये प्रति घण्टा में काम किया। दो बार गुड़गाँव के चक्कर लगाये पर काम नहीं मिला तब बहन के पास फरीदाबाद पहुँचा.....

भोजन के बाद 11½ बजे फिर काम शुरू। काम करते समय कुछ नहीं सोचता। सिर्फ यही देखना कि मोटर पास करनी है कि फेल करनी है। जल्दी, और जल्दी करो की कहते हैं तब स्थाई मजदूरों द्वारा दिखाई राह पर चल कर एक-दो खराबी को अनदेखा कर, बाइपास कर मोटर को पास कर देते हैं। एक बजे 15 मिनट के ब्रेक में बैठ जाते हैं....

जीजा ने यहाँ जेमी मोटर (जी.ई.मोटर) में ट्रेनी लगवाया। लालच और डर के जरिये ट्रेनी पर काम का बोझ लगातार बढाया जाता है। निकाल देंगे, 6 महीने बाद 1½ साल वाला ट्रेनी बना देंगे, शायद पक्का ही कर दें..... और 6 महीने बाद सड़क पर, जैसे कि मैं आ गया हूँ.....

2½ बजे छुट्टी होने पर मैं पानी पी कर आराम से निकलता हूँ – कमरे पर पानी खारा है। बहन थी तब वह खाना बनाती थी। बहन बीमार रहती थी, भाई के साथ गाँव भेज दिया। जीजा भी नौकरी छोड़ कर चले गये। मैंने 550 रुपये किराये पर मुजेसर में कमरा लिया। भोजन बनाने का सामान लिया। मुझे खाना बनाना नहीं आता था, पड़ोसियों से पूछ-पूछ कर बनाना सीखा।

सुबह जल्दी-जल्दी आता हूँ और छूटने पर धीरे-धीरे जाता हूँ। रास्ते में कभी-कभार बाटा पुल के नीचे धरती पर दुकान लगाये रिश्तेदार के पास बैठ जाता हूँ, कभी फुटपाथ पर बटुये बेचते खुले विचारों वाले आदमी के पास, कभी मजदूर लाइब्रेरी में। रास्ते से सब्जी खरीद कर 5-6 बजे कमरे पर पहुँचता हूँ। दिमाग में यही रहता है कि जल्दी भोजन तैयार हो जाये ताकि खा-पी कर सोया जाये। सोने में 10½-11 बज जाते हैं। कभी-कभी ही सपना आता है और हर बार सपने में बहती हुई नदी, साफ पानी की नहरें, चारों तरफ हरियाली, उड़ते हुये पक्षी होते हैं।

2½ से रात 11 तक की शिफ्ट बिलकुल अच्छी नहीं लगती पर फिर भी एक महीने करनी पड़ी। मिलने-जुलने का सर्दियों में तो समय ही नहीं बचता: 8 बजे उठना, 35-40 लोगों के बीच एक लैट्रीन है, लाइन लग जाती है इसलिये सुबह 5 बजे से पहले या फिर 9 बजे के बाद लैट्रीन जाता हूँ। दस बजे नहाना, भोजन बनाने-खाने में 12½ बज जाते हैं।

तीन हफ्ते रात 11 से सुबह 6 तक की शिफ्ट में काम किया। आलस्य रहता, 7 बजे कमरे पर पहुँच कर सो जाता। उठने, मंजन करने, नहाने में 12 बज जाते। भोजन बनाने की बजाय बाजार जा कर फल या गुड़-चना खाना और लौट कर पुनः सो जाना। फिर 4-5 बजे उठ कर सब्जी लाना, 6 बजे भोजन बनाना शुरू करना और खाने-बर्तन धोने में 9 बज जाते। दिन में कितना ही सो लो नींद पूरी नहीं होती। रात 3 से सुबह 5 के बीच तो नींद ज्यादा ही आती है – मशीन पर खड़े हो कर काम करते हुये उँघने लगते हैं। नींद आती इसलिये चाय पीता ....

अब नये सिरे से काम ढूँढना होगा.....वर्तमान को इस कदर भोगना पड़ रहा है कि मेरा स्वभाव ही नहीं है कि आगे की सोचूँ। (जारी)

चीन से -

कुछ माह चीन में रह कर आये एक मित्र के अनुसार :

चीन में तीव्र गति से कारखानों की सँख्या बढ रही है और सन् 2001 तक फैक्ट्रियों में 4 करोड़ स्थाई नौकरियाँ खत्म कर दी गई। गाँवों से 20 करोड़ लोग काम की तलाश में शहरों में पहुँचे हैं। चीन स्थित फैक्ट्रियों में इस समय सामान्य तौर पर 12 से 16 घण्टे प्रतिदिन एक मजदूर को काम करना पड़ रहा है। मैनेजमेन्टों द्वारा गाली-गलौच सामान्य बात है। अधिकतर मजदूरों को ठेकेदारों के जरिये रखा जा रहा है। मजदूरों की बड़ी सँख्या को दस्तावेजों में दिखाते ही नहीं हैं। जो श्रम कानून हैं उन्हें भी लागू नहीं किया जा रहा। तनखाओं का बकाया होना आम बात है। जबरन ओवर टाइम....

यही हालात तो ओखला (दिल्ली), नोएडा (उत्तर प्रदेश), गुड़गाँव-फरीदाबाद (हरियाणा) स्थित फैक्ट्रियों में हैं।

चीन में रह कर आये मित्र अमरीका सरकार के नागरिक हैं और मजदूरों के बीच सीमाओं के पार तालमेलों (सोलिडेरिटी एक्रॉस बोरडर्स) के पक्षधर हैं। और आप ?

ग्वालियर से -

जे सी मिल और ग्वालियर रेयन (ग्रासिम) ग्वालियर में बड़ी फैक्ट्रियाँ थी। वर्षों से बन्द पड़ी जे सी मिल की नीलामी हो रही है और इस फैक्ट्री में कभी स्थाई रहे मजदूर 15 वर्ष से अपने हिसाब का इन्तजार कर रहे हैं। इधर आश्वासन व जबरदस्ती की जुगलबन्दी से ग्वालियर रेयन मजदूरों से कॉलोनी भी खाली करवा ली गई है पर इस फैक्ट्री में कभी स्थाई रहे मजदूरों को भी उनकी बकाया राशियों का भुगतान नहीं किया गया है। (जानकारी " सत्यम् निर्भीक वाणी" के 7.3.07 के अंक में 'प्रबंधन व प्रशासन द्वारा फिर छले गये मजदूर' शीर्षक वाले समाचार से। पता – डॉ. विनोद केशवानी, बालाबाई का बाजार, लश्कर, ग्वालियर)

दिल्ली से -

1.2.2007 से डी.ए. के 158 रुपये जुड़ने के बाद दिल्ली में सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन इस प्रकार हैं : 8 घण्टे की ड्युटी और सप्ताह में एक छुट्टी पर महीने के अकुशल श्रमिक (हैल्पर) को 3470 रुपये (8 घण्टे के 133 रुपये 45 पैसे); अर्ध-कुशल मजदूर की कम से कम तनखा 3636 रुपये (8 घण्टे के 139 रुपये 85 पैसे); कुशल श्रमिक का कम से कम वेतन 3894 रुपये (8 घण्टे के 149 रुपये 75 पैसे)। स्टाफ में अब कम से कम तनखा मैट्रिक से कम की 3663 रुपये; मैट्रिक पास परन्तु स्नातक से कम की 3918 रुपये; स्नातक एवं अधिक की 4230 रुपये।

लिलिपुट किड्स वीयर मजदूर : "प्लॉट ए-185 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में 400 सिलाई मशीनें हैं – 200 बेसमेन्ट में और 200 पहली मंजिल पर। चार सौ सिलाई कारीगरों में से 30 की ही ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं। कारीगरों को 16½ रुपये प्रति घण्टा देते हैं और प्लस-माइनस का फेर है – 50 कारीगरों के ही 16½ रुपये प्रति घण्टा से ज्यादा बनते हैं जबकि 350 के 16½ से कम बनते हैं और मास्टर का डाँटना-हाँकना चलता है। रोज सुबह 9 से रात 9 बजे की ड्युटी है और उसके बाद भी रोक लेते हैं। प्रतिदिन 12 घण्टे ड्युटी पर 25 महिला मजदूरों, पैकिंग करते व माल नीचे ला कर गाड़ी में चढाते 30 हैल्परों, और 75 धागा काटने वाले श्रमिकों को महीने के 3312 रुपये देते हैं (जबकि 8 घण्टे प्रतिदिन व साप्ताहिक छुट्टी पर 3312 दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम था)। दूसरी मंजिल पर फिनिशिंग विभाग में 17 स्टीम प्रेस हैं जिन पर रोज 12 घण्टे काम करने वालों को महीने के 3695 रुपये देते हैं। महिला मजदूरों को रात 9 बजे के बाद 12 बजे तक रोकते हैं तब उन्हें 40 रुपये देते हैं – 20 रुपये रोटी के लिये और 20 रुपये 3 घण्टे काम के लिये, यानी, 6½ रुपये प्रति घण्टा! गेट पर सेक्युरिटी का व्यवहार ठीक नहीं है और फैक्ट्री के अन्दर प्रोडक्शन मैनेजर, मास्टर, लाइनमैन हर समय अपशब्दों का प्रयोग करते हैं। फैक्ट्री से मजदूर की साइकिल चोरी हो जाने पर साहब जिम्मेदारी नहीं लेते।"

आर जी सी इन्डस्ट्रीज वरकर : "सी-63/4 ओखला फेज-II स्थित फैक्ट्री में 875 वरकर सिलाई, कढाई आदि करते हैं। ढाई सौ स्थाई मजदूरों को हैल्पर ग्रेड दिया जाता है। कैजुअल वरकरों की तनखा 2200 से 2500 रुपये है और 6 महीने पर निकाल कर एक महीने बाद फिर नये सिरे से भर्ती कर लेते हैं। ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों में 300 महिला और 70 पुरुष – तनखा 1500 से 1800 रुपये। शिफ्ट सुबह 9½ बजे शुरू होती है और 12 घण्टे की है। महीने में 8-9 नाइट भी लगती हैं, यानी, रात 2 बजे तक काम।....."

ई.एस.आई.

कारखानों में कार्य के कारण होती मृत्यु, अंग भंग, गम्भीर बीमारियों की जिम्मेदारियों से फैक्ट्री संचालकों को बरी करने के लिये भारत सरकार ने 1948 में कानून बना कर 1952 में कर्मचारी राज्य बीमा निगम उर्फ ई.एस.आई. कॉरपोरेशन की स्थापना की। मैनेजमेन्टों-कम्पनियों को राहत देने वाले इस कदम को चलन के अनुसार मजदूरों के हित में उठाया कदम प्रचारित किया जाता है।

कारखानों में काम करते 80 लाख मजदूर (परिवार समेत 3 करोड़ 20 लाख लोग) 2005-06 में ई.एस.आई. के दायरे में थे। जिन क्षेत्रों में सरकारों ने ई.एस.आई. लागू कर दी है वहाँ की हर फैक्ट्री के प्रत्येक मजदूर पर ई.एस.आई. के प्रावधान लागू करना कानून ने अनिवार्य कर रखा है। मजदूर स्थाई हो, चाहे कैजुअल हो, या फिर ठेकेदार के जरिये रखा-रखी गया-गई हो, फैक्ट्री में काम करते प्रत्येक मजदूर की ई.एस.आई. को कानून ने अनिवार्य घोषित किया हुआ है। फैक्ट्री में कार्य करते किसी मजदूर की अगर ई.एस.आई. नहीं है तो इसका मतलब यह है कि वह मजदूर फैक्ट्री में है ही नहीं! आमतौर पर फैक्ट्री-कम्पनी-सरकार दस्तावेजों को कानून अनुसार रखती हैं इसलिये दस्तावेजों में वे उन मजदूरों को नहीं दिखाती जिनकी ई.एस.आई. नहीं है।

हरियाणा में फरीदाबाद और दिल्ली में ओखला औद्योगिक क्षेत्र का उदाहरण लें। जिन फैक्ट्रियों को दिखा नहीं रखा उनकी चर्चा फिलहाल छोड़ दें। फरीदाबाद और ओखला में जो फैक्ट्रियाँ दस्तावेजों में दिखा रखी हैं उन सब पर ई.एस.आई. प्रावधान लागू हैं। ओखला और फरीदाबाद की ऐसी फैक्ट्रियों में काम करते 75% मजदूरों की ई.एस.आई. नहीं है! कम्पनियों-मैनेजमेन्टों, दिल्ली सरकार, हरियाणा सरकार, भारत सरकार के अनुसार फैक्ट्रियों में काम करते तीन चौथाई मजदूर वहाँ काम ही नहीं करते! यही हाल भारत में अन्य क्षेत्रों में लगता है।

मजदूरों को दिखाना ही नहीं स्वयं में चर्चा के लिये विषय है। आइये ई.एस.आई. वाले एक चौथाई मजदूरों से जुड़ी कुछ बातें देखें।

ई.एस.आई. कॉरपोरेशन मजदूर के वेतन का 6.5% हर महीने लेता है – 1.75% मजदूर से, 4.75% कम्पनी से। इस प्रकार से वर्ष 2004-05 में 2260 करोड़ रुपये तथा 2005-06 में 2410 करोड़ रुपये भारत-भर में एकत्र किये गये। खर्च कितने किये ? वर्ष 2004-05 में 1258 करोड़ रुपये और अगले वर्ष 1278 करोड़ रुपये....

मजदूरों की सामाजिक सुरक्षा कही जाने वाली ई.एस.आई. योजना की लूट की थोड़ी अधिक जानकारी के लिये हरियाणा में इसके कुछ आँकड़े देखें। वर्ष 2004-05 में आमदनी 94 करोड़ 58 लाख रुपये और खर्च 43 करोड़ 61 लाख। वर्ष 2005-06 में आमद 121 करोड़ 62 लाख और खर्च 41 करोड़ 65 लाख रुपये। वर्ष 2006-07 के 6 माह (30.9.06 तक) में आमदनी 80 करोड़ 9 लाख रुपये और खर्च 25 करोड़ 80 लाख। आमदनी का 46 से 34 से 32 प्रतिशत की राह खर्च 25% की ओर है। स्पष्ट है कि ई.एस.आई. कॉरपोरेशन की कमाई और कमाई का प्रतिशत बढता जा रहा है। लूट का एक प्रमुख तरीका प्रति मजदूर प्रति वर्ष खर्च की सीमा बाँध देना है। मजदूर व उसके परिवार पर एक वर्ष में 1000 रुपये खर्च की सीमा ई.एस.आई. कॉरपोरेशन ने बाँधी है – यह भी 750 से 900 रुपये की राह से गुजर कर। परिणामस्वरूप परेशानी-दर-परेशानी भुगत रहे हैं ई.एस.आई. वाले मजदूर और उनके परिजन। और, हरियाणा सरकार के श्रम विभाग द्वारा बनाये जाते बजट में राशि का ई.एस.आई. कॉरपोरेशन द्वारा निर्धारित सीमा से भी कम होना तो सरकारी तन्त्र की एक और कहानी है।

ऐलोपैथिक पद्धति के अनुसार उपचार के लिये जो आवयश्क हैं उन से दुगुनी दवाइयों को कमीशन के चक्कर में दिया जाना, कदम-कदम पर भ्रष्टाचार व अपव्यय तो हैं ही परन्तु यह सब तो जो खर्च किया जाता है उस में हैं। ई.एस.आई. कॉरपोरेशन की खुली लूट, दस्तावेजों में दर्ज लूट के सम्मुख यह बौने हैं।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया।

RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73